E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2025; 7(7): 87-89
Received: 06-05-2025
Accepted: 09-06-2025

रजनी रानी
एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ पंजाबी,
एम.एम. (पीजी) कॉलेज,
फतेहाबाद, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
रजनी रानी
एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ पंजाबी,
एम.एम. (पीजी) कॉलेज,
फतेहाबाद, हरियाणा, भारत

मृणाल पाण्डे के साहित्य में परिवार सामाजिक नियंत्रण के साधान

रजनी रानी

DOI: https://www.doi.org/10.33545/27068919.2025.v7.i7b.1553

सारांश
परिवार समाज की आधारभूत इकाई है। सामाजिक संस्था मे परिवार का स्थान सर्वोपरि माना जा सकता है। यह समाज की मौलिक सार्वभौमिक तथा प्रमुख संस्था है। समाज को विस्तृत तथा जीवित रखने का कार्य परिवार द्वारा ही संभव है। अगर कहा जाए कि परिवार ही समाज को अमरत्व प्रदान करता है तो कोई अतिश्योकित न होगी। 'परिवार' शब्द के बारे में विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने मत प्रस्तुत किये।
1. जुकरमैन के अनुसार – एक परिवार, समूह, पुरूष स्वामी, उसकी स्त्री या स्त्रियों और उनके बच्चों से मिलकर समाज बनता है और कभी–कभी इसमें एक या अधिक अविवाहित पुरूष भी सम्मिलित रहते हैं।[1]
2. वर्गीस तथा लॉक का कथन – एक परिवार उन व्यक्तियों का समूह है जो विवाह, रूधिर अथवा गोद लेने के सम्बन्धों में एक दूसरे से बंधे रहते है, जो एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं, एक दूसरे के साथ अन्तः क्रिया और अन्तः संचार करते रहते है जो एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं जो पति–पत्नी, माता–पिता, पुत्र–स्त्री और भाई–बहन की निजी सामाजिक भूमिका में, एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया और अन्तः संचार करते रहते हैं और जो एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं तथा उसे बनाए रखते हैं।''[2]
आर्गबन तथा निमकॉफ ने बतलाया कि संतान सहित तथा संतान रहित पति–पत्नी की समिति को या संतान सहित स्त्री या संतान सहित पुरूष की थोड़ी बहुत समिति को परिवार कहते है।[3]

कुटशब्दः सामान्य संस्कृति, रूधिर, अतिश्योकित, सार्वभौमिक, गृहस्थी

प्रस्तावना
अतः परिवार को सामान्य निवास आर्थिक सहयोग एवं प्रजनन के आधार पर समाज की अन्य संस्थाओं से अलग किया जा सकता है। सामाजिक विकास के प्रत्येक स्तर पर समाज का अस्तित्व बना रहता है। स्नेह, आदर, श्रद्धा, वात्सल्य, त्याग, प्रेम और संतान कामना आदि भावनाओं से परिवार बंधे रहता है। अपनी संस्कृति धार्मिक विश्वास, सामाजिक मूल्यों का पाठ बालक को परिवार से ही मिलता है।
मृणाल पाण्डे के साहित्य में परिवार सामाजिक नियंत्रण के साधान के रूप में कार्य करता है। उसमें दिखाया हैं कि परम्परा से चली आ रही मर्यादाओं, आचरण के नियमों और विधि निशेधों का मनुष्य आसानी से उल्लंघन नहीं कर सकता । समाज का नियंत्रण उस पर होता है और इस नियंत्रण को परिवार ही लागू करता है। इसके साथ ही मृणाल जी बताती है कि उत्तरदायित्व की भावना भी परिवार को संगठित रखने और उसे स्थायीत्व प्रदान करने के लिए आवश्यक हो जाती है जो परिवार और समाज दोनों के लिए हानिकारक हैं । परिवार को सदस्यों की संख्या के आधार पर दो वर्गों में रखा जाात है – संयुक्त परिवार, एकल परिवार।

संयुक्त परिवार
आधुनिक युग में समाज की सभी प्रमुख इकाइयों में संतुलन तथा अनुकूलन का अभाव होने के कारण तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे हैं। पारिवारिक सदस्य परिवार के हित में कार्य न करके निजि हित में कार्य करते हैं तो पारिवारिक विघटन का कारण बनते है। 'कैंसर' कहानी में माता–पिता के प्रति बच्चों का घटता स्नेह अपनी पूरी मार्मिकता से वर्णित हुआ है। पीढ़ियों के विचारों का अंतर भी दिखलाई पड़ता हैं माता पिता के प्रति सर्फ आर्थिक रूप में ही पूरा हो जाता है। छोटे बेटे की कर्तव्य सिर्फ हफ्ते की छुट्टी मिली, अतः वह जा रहा है और मां से कहता है –''जैसे ही जरूरत होगी, बड़के भैया तार या फोन से टपबर कर देंगे, व तुरन्त आ ....फिर अभी तो बाबू जी ठीक नहीं . ...तभी खबर कर.....बच्चों का भी स्कूल.....फिर नोटों का एक पुलिंदा उनके पास सरका कर वह उठ गया था। वे चुपचाप उन्हें ताकती रही। आखिरकार सारे रिश्ते इसी ढ़ेरी पर आकर रूक जाते है।''[4] बुआ जी के उठने के बाद ही हर चीज सिकुड़नी शुरू हो गयी थी। देखते–देखते देवरों ने अपना–अपना हिस्सा समेटा और इधर–उधर जाकर अपनी गृहस्थी संभाल ली थी।

ननद और ननदोई जो विलायत गए, वहीं के हो रहे। कुछ साल में लड़की–लड़कों के ब्याह हुए तो वे अलग–थलग। इतनी बड़ी हवेली भांय–भांय करती रह गई थी।''[5] पहले के मकान में सिमट गए है। मन भी परिवार की तरह बिखर गया है। बस एक चुप्पी है जो सुरजी और दामोदर जी के मध्य रही गयी है।

'दुर्घटना' कहानी में शहरी और ग्रामीण सभ्यता के बीच टकराहट दिखाई देती है।

''मेरे होने के बाद अम्मा ने बाबू जी से गांव छुड़वा दिया। यहां रहते उन्हें अपने बेटों के नितान्त 'हूश देहाती' बन जाने की आशंका थी, जो निराधार न थी। हम दोनों के जन्म से पहले ही शायद उन्होनें हम दोनों के स्वर्णिम भविष्य के कई सपने देख के चक्कर में ही पड़े रहे, तो हो चुका।''[6] बड़ा भाई विदेश से लौटकर अपनी पसंद की लड़की से विवाह कर लेती है और सीधा पत्नी को लेकर फ्लैट में चला जाता है। बेटे–बहू की कार के नीचे आकर पिता की मृत्यु हो जाती हैं छोटा बेटा जब भाभी के पास आता है तो वह पहचानती तक नहीं। बेटा बहू यह भी नहीं जानते कि मरने वाला उनका ही पता था। बहू यह जानकर भी कि वह मरने वाला उसका ससूर था, कहती है, ''वैरी इरिस्पांसिबल। हमारी कार का तो मडगार्ड काफी पिचक भी गया, हमने सोचा कि छोड़ो भी अब जरा–जरा सी चीज का हर्जाना क्या भरवाएं।''[7] बिना किसी संकोच के किसी पाटी में जाने के लिए उठ जाती है।

'शरण्य की ओर' कहानी में भी दिखाया गया हैं कि माता–पिता के स्वभाव का बच्चों पर कितना प्रभाव पड़ता हो। डॉली की मां आधुनिक विचारों की महिला है, वह अपनी बेटी को भी ऐसी शिक्षा देती है। इससे डॉली का मन भटक जाता है। वह अनेक लड़कों से प्रेम करती है, परन्तु यह निश्चित नहीं कर पाती कि उसे शादी के लिए कैसा लड़कों से प्रेम करती है, परन्तु यह निश्चित नहीं कर पाती कि उसे शादी के लिए कैसा लड़का चाहिए। पारिवारिक माहौल ऐसा होने के कारण उसे अपनी मां से भी ठीक राय नहीं मिल पाता। वह तो छुट्टियों में भी अपने घर नहीं जाना चाहती, ''मैं तो घर जाने के बजाय ये दो दिन यही काट लूंगा। एक तो जाते ही अपने लिए कोई ढूंढ़ लेना चाहिए। बड़ी उम्र सी शादी–जैसे कि मैं हाथ बढ़ाऊंगी, तो कोई लड़का मेरी हथेली पर टपक पड़ेगा...उसके स्वर में एक विवश दैन्य का भाव था।''8 इसी प्रकार डॉली की सहेली विजया के घर का वातावरण इसके विपरित होते हुए भी वह विजया घर नहीं जाना चाहती है क्योंकि मां विधवा होने के बाद वैरागिनी सी हो जाती और घर में रोक–टोक लगा कर रखती है। इस प्रकार आज संयुक्त परिवार में भी बच्चे माता–पिता से, घर से दूर भगाते है।

'कर्कशा' कहानी में हमें ऐसे संयुक्त परिवार का चित्रण मिलता है, जहां चार पांच बहनें है। मां–बाप द्वारा सब बहनों को सुखी सम्पन्न घरों में ब्याह दिया जाता है, परन्तु दुर्भाग्य से छोटी–बेटी की शादी एक शराबी पति से हो जाती है जिसके कारण उसके घर गरीबी छाई रहती है। अपनी सभी बहनों को तथा बहू पोतों में मस्त देखकर भगगों को उनसे ईर्श्या होती है, परन्तु बेचारी उन्हीं से मां को कोसती, अनेक बार तानें मार–मार कर रूलाती रहती है, ''अम्मा का ग्लानि का यह घाव भग्गो ने कभी भरने नहीं दिया। जब कभी मां को वह बेटियो–बहुओं, नाती–पोतों के बीच तृप्त हो हंसता देखती, तो चट अपने दुःख की लेकर दौड़ी आती और जिह्वा की दांत से टंकार–टंकारकर तब तक उसके रेशा–रेशा फैलती रहती, जब तक कमर गुझन हो जाती और अम्मा से न पड़ती।''[9]

एकल परिवार

यदि परिवार का सर्वाधिक विस्तृत रूप संयुक्त परिवार है तो परिवार का अपेक्षाकृत कम विस्तृत रूप केन्द्रीय परिवार या एकल परिवार है। एकल परिवार में भी सर्वाधिक आंतरिक वृत दाम्पत्य सम्बन्धों को होता है जो परिवार का लघुतम रूप हैं ऐसे परिवार में निकट के नाती–सम्बन्धी नहीं रहते। पति अथवा पिता परिवार का संचालक एवं संरक्षक होता है। वह सदस्यों के लिए एक निवास स्थान की व्यवस्था करता, जहां वे धूप, सर्दी, वर्षा आदि से अपनी रक्षा करते। ऐसे परिवार आधुनिक समाज में विशेषतः नगरीय समाज में बहुलता से पाए जाते है। साठोत्तरी भारतीय समाज में आधुनिकता बोध बढ़ा है, पश्चिम के सम्पर्क में अधिकाधिक आए है, हमारे परम्परागगत विश्वास और आदर्श हमसे दूर हुए है, इसकी परिणति टूटते हुए परिवार सम्बन्धों में हुई है, जिनमें सबसे ज्यादा प्रभाव दाम्पत्य सम्बन्धों पर हुआ। इस ह्रास को मृणाल पाण्डे जी ने बहुत ही कुशलता से पहचाना और इसकी अभिव्यक्ति अपने साहित्य में बड़ी सूक्ष्मता से की।

एकल परिवार की कल्पना करते समय सर्वप्रथम दाम्पत्य सम्बन्ध ही सामने आता हैं। 'दम्पति' शब्द की व्याख्या करते हुए 'अमरकोश' में 'पति और पत्नि' को 'दम्पति' कहा गया है और दम्पति के पर्यायवाची शब्दों के रूप में 'सम्पति' जायापति और भार्यापति शब्द किए गए हैं।''[10] वेदों में भी विवाह को महत्वपूर्ण माना गया हैं

''वही व्यक्ति पूर्ण पुरूष है, जो पत्नी तथा संतानयुक्त हैं''[11] दाम्पत्य जीवन में बंधने से मनुष्य अपनी यौन इच्छाओं की पूर्ति करता है, जिसको समाज द्वारा स्वीकृति प्राप्त होती है। वैदिक युग में दाम्पत्य जीवन की पवित्रता अक्षुण्या थी। महाभारत में भी यही क्रम प्राप्त होता है। आदि पर्व में गृहकार्य में तत्पर सत्यवती एवं पतिव्रता नारी को आदर्श भार्या की संज्ञा दी गई है। मृणाल पाण्डे जी ने दाम्पत्य जीवन के विविध पहलुओं पर अपनी लेखनी चलाई है। इन्होनें सुखी दाम्पत्य जीवन के विविध पहलुओं पर लेखनी चलाई है। इन्होनें सुखी दाम्पत्य जीवन की इन्द्रधनुषी छठा का का वर्णन करने के साथ बिखरते दाम्पत्य जीवन का चित्रण भी अत्यंत प्रभावशाली ढ़ंग से किाय है।

मृणाल पाण्डे की कहानी 'कोहरा और मछलियां' की मम्मी विवाह तो एक लेखक से कर लेती है लेकिन बाद के सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते, उन्हें तो अपना रूप, अपने फिल्मी जीवन की नाटकीयता ही रास आती है। अपने पुरूष मित्रों के साथ पार्टियों में रात गुजारती उनके ऊपर लदती ये भूल जाती कि उनका पति इतना बीमार है। उसकी कभी भी मृत्यु हो सकती है। पति के कमरे में सिर्फ पत्रकारों को इन्टरव्यू देने आती हैं और तभी पति की सेवा में तत्पर पत्नी के रूप में फोटो खिंचवा लेती है। पति की मृत्यु के बाद भी उसके इस नाटकीय जीवन में कोई अंतर नहीं आता।

'शरण्य की ओर' कहानी में पालित और उमी रहते रहे पति–पत्नी की तरह लेकिन उनमें बहुत दूरियां आ गई है। उमी के एक राजदूत के साथ संबंधों को लेकर दोनों में जो झगड़ा हुआ था, उसने उन दोनों में दूरियां ला दी। अब पालित किसी लड़की के साथ सम्बन्ध बनाकर उमी से बदला लेना चाहता है – ''दुनिया को दिखाने को समझौता हो भी गया तो क्या? अंधा भी देख सकता कि दोनों इससे कितने असंतुष्ट है...कैसे एक–दूसरे को बुली करते रहते हैं।''[12]

'कगार पर' कहानी के पति–पत्नी में अलगाव का कारण संस्कृति का अंतर है विशू ने विदेश में रहते, विदेशी लड़कों से विवाह तो कर लिया, परन्तु दोनें ही अपने –अपने संस्कारों में बंधे है कि उन्हें छोड़ नहीं पाते। पति–पत्नी की हर बात को डॉक्टर या अपनी मां का हवाला देकर नकार देता हैं। धीरे उनके सम्बन्धों में आती तटस्था उन्हें अलग होने का मजबूर कर देती है।

'पितृदाय' कहानी की भारतीय लड़की विदेश में जाकर एक नीग्रो में शादी कर लेते है, लेकिन बेरोजगार नीग्रो पति के साथ उसकी ज्यादा देर तक निभती रही। तलाक के लिए दरवाजे खटखटाता नीग्रो पति इल्जाम लगाता हैं कि नषीले पदार्थो की आदत उसे उसकी डॉक्टर पत्नी ने ही डलवाई।

'विरूद्ध' उपन्यास में रजनी और उदय आधुनिक विचारों वाले दम्पति है पर रजनी को हर समय लगता हैं कि वह उसे हर बात

अपनी पसंद की करवाना चाहता, उसे दबाकर रखना चाहता है इसी कारण वह उससे कटी–कटी सी रहती लेकिन वह स्वयं भी इसका कारण नहीं जान पाती – पर आखिर यह सारा आक्रोश भरा आवेग है किसके विरूद्ध? उदय के? अपने? या खुद पर उन दोनों से परे किसी अक्षित ताकत के प्रति जो कि इन मुठभेड़ों के प्रति उसकी सारी वितृश्णा के बावजूद हर रोज दोनों को प्रतिद्वन्द्वियों की तरह परस्पर चुनौती देने को आमने–सामने ला खड़ी करती है।''[13]

''पुरानी धारणा के अनुसार हर स्त्री को विवाह के बाद अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व पति के व्यक्तिव में विसर्जित, विलयित करना पड़ता है। उसे अपने स्वतंत्र व्यक्ति ही रक्षा का अधिकार नहीं दिया गया है।''[15] परन्तु आधुनिक समाज की पत्नी रजनी यह सब मानने को तैयार नहीं। वह सोचती हें कि विवाह के बाद जब पुरूप का स्वतंत्र व्यक्तित्व रहता हैं तो नारी पर इतने अंकुश क्यों लगाए जाते हैं, उससे हर बात का कारण क्यों पूछा जाता है – किसी पुरूष के संदर्भ में जो सवाल निहायत बेहूदे लगते है, वहीं एक औरत और किस कदर खूबसूरत और थौथी भावुकता से चस्पा हो जाते है, ताज्जुब है।'' रजनी को रूढ़िवादी महिलाओं की तरह अपने पति को देवता के समान मानकर उसके कहे अनुसार ही चलना पसंद नहीं है – जिन्दगी भर क्या वह भी अपनी मां की तरह अपने खाबिंद की परछाई का देवत्व थामे अपने को आलोप करती जाएगी।[16]

मध्यमवर्गीय परिवार की 'सुफारी बुआ' कहानी में ऐसी विधवा का चित्रण किया है जो विधवा होना अभिषाप मानती है। सुफारी बुआ असमय ही विधवा हो जाती है। जिस कारण उन्हें ससुराल में ताने सुनने को मिलते हैं। वह अपने मायके आ जाती है, तब उनकी मां उनसे कहती हैं कि यदि इस घर में रहना है तो आंख, कान, मुंह बंद करके रहना होगा। समाज में मध्यमवर्गीय परिवार 'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास में मृणाल पाण्डे जी ने निम्न वर्गीय परिवार के एक लड़के बंटी का चित्रण किया। लेखिका उस छोटी सी उम्र के बच्चे की दयनीय दशा देखकर द्रवित हो उठती है – ''अगली बार जब बंटी आया था तो उसका फटा पुराना स्वेटर भी उसके बदन पर नहीं था। खांस रहा था। खों–खों । गरम चाय पीकर मेरा पुराना शॉल ओढ़कर तनिक सास पलटी तो उसने बताया कि नीचे बाजार में मामे ढ़ाबा वाला मुंडू धनुवा की पहाडी है। उसके पास स्वेटर जो नहीं था और उसके खुद के पास तो छत है, रात को ढ़कने को चादर है, उस लड़के को जब सब सो जाते है तब ढ़ाबा बंद कर के ठंडे पानी से जूठी प्लेंटे धोनी होीत हैं उसके सूजें हाथों से मलपस हो गया है, गंदा, जूठा खाना छू–छू कर।''[17]

मध्यवर्गी लोग ऐसे गरीबों पर अत्याचार करते हैं उन्हें उनके दुख की परवाह नहीं होती। प्रदेश के ही एक मैदानी राजनेता ने पहाड़ियों में रहने वाले गरीब लोगो पर व्यंग्य करते हुए कहा कि 'वे तो मैदानियों के घरों में बरतन–भांडे मांजने आए है। ज्यादा चबर–चबर करेंगे तो वे पिट जाएंगे, गरीबों को अपनी औकात में रहना चाहिए।''[18]

निम्न वर्गीय लोगों को कदम–कदम पर धोखा देकर अमीर लोग उनसे उनका सब कुछ छीन लेना चाहते है। यद्यपि देने को उनके पास होात कुछ भी नहीं लेकिन भगवान का दिया शरीर भी उनके लिए उपयोग की वस्तु बन जाता है, जिसके हिस्से बेचकर वे पैसा कमाने की सोचते है। ''एक गरीब बच्चे से उसका अतिरिक्त गुर्दा या त्वचा का टुकड़ा ले लेना या उसकी हड्डी से कुछेक सी.सी. मज्जा खींच लेना और उसके परिवार को बदले में भरपूर मुआवजा दिलवा देना कितने तो पुण्य का काम है। हमारे देश में पैसे वाले अमीर लोग अपने शरीर को ज्यादा खाकर तबाह कर लेते हैं तो बिना पैसे वाले लोग भूख और कुपोषण से सुखाकर, तो जिसके पास जो अतिरिक्त है, उसे एक से लेकर दूसरे को देना–लेना, यह तो जीवन जगत में समता कायम करना हुआ।''[19] और अंत में गरीबों के इस शोषण को सामाजिक न्याय की संज्ञा दे दी जाती है।

निष्कर्ष

लेखिका का भाई मध्यवर्गीय परिवार के एक सम्पन्न, धनाढ्य पात्र के रूप में सामने आता है, जिसे गरीबों से कोई 'मेरा कोई सरोकार नही', पैसा कमाना ही उसका मुख्य लक्ष्य है। लेखिका के ही शब्दों में, ''मेरा भाई हमारी भूतपूर्व मां का इकलौता बेटा, इस शहर का एक बड़ा उद्योगपति और सात समुद्र चौदह भुवनों तक फैली कम्पनी का बॉस है। वह इतना धनाढ्य हैं कि उसे भोंडे ढ़ंग से पसीना बहाने की जरूरत नहीं। अब वह खेल–खेल में ही बटन दबाकर जहां चाहे कंचन की वर्षा कर सकता है। इस वक्त भी उसके हाथ में गोल्फ की स्टिक है और कई एकड़ में फैले अपने विराट दफ्तर के इस कमरें के भीतर वह एक कीमती बुखारा कालीन पर इस ओर मुंह करके रख गए एक कांच के कीमती व्हाइन ग्लास तक अपनी गोल्फ की गेदं को पहुंचाने का अभ्यास कर रहा है।''[19] इस उपन्यास में दोनों वर्ग मध्यवर्गीय और निम्नवर्ग का चित्रण लेखिका ने बहुत सुंदर ढ़ंग से पार्वती, बंटी और अपने भाई के माध्यम से किया है। लेखिका के ही शब्दों में ,''भाई, सम्पन्न व्यापारी, पैसे की हवस से न ही, पर उसे कमाने की उत्तेजना के कोड़े तले अहानेश अपने को दौड़ात, अन्तर्मन में शुष्क संवेदनाहीन भिक्षु या अन्तर्मुखी।....पार्वती, कीचड़ की तरह अपने सिर के ऊपर सबकी गुजरती आहटें सुनती, पैरों के आघात् झेलती।''[21] लेखिका ने इन दोनों पात्रों के माध्यम से मध्यमवर्ग और निम्न वर्ग का साक्षात् चित्र प्रस्तुत किय है, लेकिन अंत में लेखिका यही मानती हैं कि मध्यमवर्गीय लोगों को जो सुख वैभव प्राप्त है, वो निम्न वर्ग की ही देन है। ''अमीर बस्तियां जो गड़–मड़पना भुला कर अमीर बनी है, वही बंटी और पार्वती जैसी विस्थापितों की अर्न्तमुखी और गवौली दुनिया की एक मात्र निजी ने मत है।'

संदर्भ ग्रंथ

1 एस.जुकरनैन, द सोशल लाइफ आफ मन्कीज एण्ड, पृ.225
2 ई.डब्ल्यू.वर्गीस तथा एच.जे.लॉक, द फैमिली फ्राम इंस्टीट्यूषन आफ कम्पेनियशिन, पृ.8
3 डब्ल्यू.एफ. ऑर्गबर्न और एम.एफए निमकॉफ, ए हैण्ड बुक ऑफ सोशियोलॉजी, पृ.459
4 मृणाल पाण्डे, दरम्यान, पृ.142
5 मृणाल पाण्डे, पृ.145
6 वहीं, पृ.159
7 वहीं, पृ.165
8 मृणाल पाण्डे, पानी कि एक बात थी, पृ.39
9 मृणाल पाण्डे, चार दिन की जवानी तेरी, पृ.39
10 दम्पति जपंती जायापति भार्यापति च तौर, अमरकोश, काण्ड–2,श्लोक 218पृ.214
11 मनुस्मृति, अध्याय 9, पृ.96
12 मृणाल पाण्डे, शरण्य की ओर, पृ.52
13 मृणाल पाण्डे, विरूद्ध पृ.8
14 उमा केवल राम, मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिकता बोध, पृ.99
15 मृणाल पाण्डे, विरूद्ध, 72, 73
16 मृणाल पाण्डे, रास्तों, पृ.69
17 वहीं, पृ.68
18 मृणाल पाण्डे, रास्तों, पृ.78
19 वहीं, पृ.19
20 मृणाल पाण्डे, रास्तों, पृ.139
21 वहीं, पृ.21